सत्यांश

काम की जीत और जीत का काम

हाल में संपन्न दिल्ली नगर निगम चुनाव में तीनों निगमों - उत्तरी दिल्ली, दक्षिणी दिल्ली और पूर्वी दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी की एकतरफा जीत हुई है। इस समय देश के ज्यादातर हिस्सों में किन्हीं दृश्य-अदृश्य कारणों से भाजपा के पक्ष में स्थिति बनी हुई है। इसलिए ऐसा होना आश्चर्य जनक नहीं लगता, लेकिन इस चुनाव में उस आम आदमी पार्टी की करारी हार विस्मयकारी लगती है, जिसने दो साल पहले भारतीय जनता पार्टी को दिल्ली विधानसभा चुनाव में जबर्दस्त शिकस्त दी थी और वह भी तब, जब उससे सात-आठ महीने पहले मई २०१४ के लोकसभा चुनाव में मोदी लहर के कारण केंद्र में भाजपा की अपने दम पर पूर्ण बहुमत और एनडीए को मिलाकर अच्छे बहुमत की सरकार बन चुकी थी। तब दिल्ली की सातों सीटों पर भाजपा का कब्जा हुआ था। छोटे-से कार्यकाल में केजरीवाल सरकार की लोकप्रियता में बड़ी गिरावट शोचनीय है। आखिर किन कारणों से लोकसभा व नगर निगम में अलग धारा भाजपा के पक्ष में, तो उन दोनों के बीच हुए विधानसभा चुनाव में दूसरी धारा आम आदमी पार्टी के पक्ष में बही है? एमसीडी का परंपरागत भ्रष्टाचार भी एक मुद्दा रहा है। इसके बावजूद, लोगों ने लगातार तीसरी बार भाजपा को ही क्यों चुना है? इसका उत्तर आप की पराजय के कारणों में बहुत हद तक निहित है। आम आदमी पार्टी के गठन और दिल्ली में उसकी सरकार बनने पर जो उम्मीद बँधी थी, उस पर वह खड़ी तो नहीं उतरी, अनेक आचरण व कार्य उसकी उपज की आकांक्षाओं के ठीक उलट सामने आने लगे। प्रसिद्ध साहित्यकार गिरिराज किशोर ने तब 'जनसत्ता' में उसकी संभावनाओं पर लिखते हुए दिनकर जी की निम्न पंक्तियों को उद्धृत किया था

जहर की कीच में ही आ गए जब,
कलुष बनकर कलुष पर छा गए जब,
दिखाना दोष फिर क्या अन्य जन में,
अहं से फूलना क्या व्यर्थ मन में।

कहने की जरूरत नहीं कि राजनीति के कीचड़ में आम आदमी पार्टी भी कीचड़ की ही भरपूर होली खेलने लगी। कानून मंत्री जितेंद्र तोमर की फर्जी डिग्री मामले में किरकिरी, सोमनाथ भारती की पुलिस से उलझने एवं बाद में पत्नी से मारपीट के आरोप में गिरफ्तारी, घूसकांड में आसिम अहमद खान की मंत्री पद से बर्खास्तगी, सेक्स कांड में पूर्व मंत्री संदीप कुमार के फँसने से छियालेदर, स्वास्थ्य मंत्री सत्येंद्र जैन पर मनी लांडिग का केस, दिल्ली सचिवालय में छापे और सचिव राजेन्द्र कुमार का जाँच के घेरे में आने से फजीहत, नेतृत्व का निरंतर बिखराव जैसे कारणों से आप की साख को भारी धक्का लगा। इधर आप सरकार के पूर्व मंत्री कपिल मिश्रा ने सीधे केजरीवाल पर आरोप लगाकर रही-सही कसर पूरी कर दी है। बिजली-पानी की दर में कमी करने के बावजूद उसकी व्यवस्था अब तक सुचारु नहीं हो सकी। हो सकता है कि ईवीएम पर सीमित मात्रा में कुछ आरोप सही भी निकले, किंतु इस पर लोगों का अभी पूरा विश्वास है, अतः ऐसे आरोप का हजम होना नामुमकिन है। जिस राज्य में चुनाव हो, वहाँ केजरीवाल को ही मुख्यमंत्री बनाने का शगूफा छोड़ना भी अच्छा संकेत नहीं देता। आप को चौकड़ी या मंडली की तरह चलाने की जानी-अनजानी छवि बन जाने से उसके लोकतांत्रिक स्वरूप को नुकसान हुआ है।

आम आदमी पार्टी की सरकार द्वारा कम समय में दिल्ली के स्कूलों की इमारतों का काया

कल्प जैसे कुछ उल्लेखनीय कार्य करने का साहस दिखाया गया, पर व्यापक रूप में न तो शासन प्रशासन का और न ही दलीय राजनीति के स्तर पर कोई सुव्यवस्थित वैकल्पिक पद्धति की मिसाल पेश की और न ही वह ऐसा करने की इच्छा शक्ति से ईमानदारीपूर्वक जूझती हुई दिखी। हो सकता है कि कई मामलों में उसकी नीयत साफ हो और संकल्प, साधन व दिशा-दृष्टि के अभाव में वह काम न कर पाई हो, लेकिन राजनीति में काम करने से ज्यादा उसे करते हुए दिखना दिखाना मायने रखता है। बाकी दलों की तरह आप भी इसे आजमाती रही है। दिल्ली सरकार के पास अपेक्षाकृत कम शक्तियों की वजह से अनेक जगह वास्तव में काम करना कठिन है, पर उसे करने की सच्ची कोशिश तो झलकनी चाहिए। आप सरकार वजह-बेवजह उपराज्यपाल, दिल्ली पुलिस व केंद्र से टकराव करती रही। हालॉकि यह राजनीति का ही हिस्सा होता है और आप की अल्पजीवन राजनीति का भी रहा है। कुछएक बार टकराव जरूरी भी होता है, पर हमेशा फायदेमंद ही हो - आवश्यक नहीं। राजनीति का पूरा चोला बदल देने के संकल्प व्यक्त करने वाली आम आदमी पार्टी की शाब्दिक मार-धार की राजनीति, आक्रामकता तथा फिजूल के बिना सिर-पैर वाले बयान, आरोप करने से उसकी साख को बट्टा लगा है, बेशक अफवाहों के माध्यम से नितांत उथले मिथ गढ़-गढ़कर लंबे समय से राजनीतिक व शासकीय कार्य चलता रहा है, तथापि ऐसी पृष्ठभूमि में भी यह सिक्का कहॉ चलेगा और कहॉ नहीं चलेगा - कहना संभव नहीं है। आम आदमी पार्टी के समर्थकों के धीरे-धीरे छिटकते जाने से तूफानी उफान की तरह आया जनसमर्थन बुलबुले की तरह कब कहॉ चला गया; पंजाब, गोवा व अब दिल्ली में पता नहीं चला। लेकिन अभी दिल्ली सरकार का आधे से अधिक का कार्यकाल बाकी है, इसलिए संभलने के लिए काफी मौका है, जिससे आगे के चुनावों में बढ़िया प्रदर्शन की संभावना बन सकती है। भाजपा विधानसभा चुनाव के लिए कमर कस रही है और चारों ओर की जीत से उसका मनोबल बढ़ा हुआ है। लेकिन जोखिम उसके लिए भी कम नहीं है, उसको मिला सर्मथन भी पानी में उफान की तरह ही आया है। यदि उसने बेहतर ढंग से सर्वस्पर्शी काम नहीं किया, तो बुलबुला शांत होने में कितना समय लगता है।

चुनावी जीत का सिलसिला जारी रखने के सिवा भाजपा भी जनहित का बृहतर दीर्घोपयोगी काम करके जमीनी धरातल पर स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ पाई है। फिर भी वह जीत रही है तो कुछ कारण तो है, जिसे लोग जनमानस का मोदीमय होना मानते हैं। लोकतंत्र या किसी भी तंत्र के कैसे भी समर में जीत से बढ़कर कोई दूसरा तोहफा होता है क्या? जीत अपने आप में सबसे बड़ा काम है, परिणाम है और काम का प्रमाण भी है! यह साध्य भी है और साधन भी है। इसलिए किसी राजनीतिक दल के लिए जीत सचमुच बड़ी उपलब्धि है।

काम और जीत का यह अंतर्द्वंद्वात्मक संबंध काफी अनूठा है। जीत जितनी सीधी-सपाट होती है, काम का समाजशास्त्र उतना ही जटिल होता है। यह कब, कैसे, किस प्राथमिकता से कौन संपन्न कराए, कौन काम लोगों को भाएगा, किससे वोटबैंक बढ़ेगा-बनेगा - इसके ठीक-ठीक आकलन को भी दूसरे कारक जब-तब ध्वस्त करते रहते हैं। अनेक बार कम काम पर जीत हो जाती है, तो कई बार अपेक्षाकृत अधिक अच्छे काम करके भी हार हो सकती है। हमेशा काम से ही परिणाम तय नहीं होते, बहुत सारे दूसरे फैक्टर भी प्रभावकारी होते हैं। यही कारण है कि कुछ दल-समूह सब कुछ छोड़कर केवल दूसरे फैक्टर वाले काम में लगे रहते हैं। काम और जीत के इस संबंध में काम की जीत मानी जाए या जीत से काम संपन्न माना जाए - यह असमंजस्य सदैव बरकरार रहता है।